

परिमल प्रकाशन

१७ एम० आई० जी०, बाघम्बरी आवास योजना
अल्लापुर, इलाहाबाद-२११००६

मार्क्स, एंगल्स, लेनिन, माओ,
हो ची मिन्ह, चे और
आगस्टिनो नेटो की कविताएँ

गाथाएँ सपनों की

अँगरेजी से भाषान्तर
सोमदत्त

प्रकाशक
परिमल प्रकाशन
१७ एम० आइ० जी०
बाघम्बरी आवास योजना
अल्लापुर, इलाहाबाद-२११००६

•

मुद्रक
राज लक्ष्मी प्रेस
२ सी/१ चिन्तामणि घोष रोड
कटरा, इलाहाबाद

•

•

आवरण
इम्पैक्ट, इलाहाबाद

•

प्रथम संस्करण १९८३ ईसवी
मूल्य पचीस रुपये

GATHAYEN SAPNO KI Poems Translated By SOMDUTT

सकल्पधर्मा चेतना के स्वर

'हर ऐसा व्यक्ति जो बुर्जुआ समाज के सामाजिक एव विचारधारात्मक सकट का हल खोजना चाहता है (क्योंकि निस्सदेह समकालीन बुर्जुआ साहित्य की विषय-वस्तु यही है) वह घोषित समाजवादी नही होगा। यह पर्याप्त है कि कोई रचनाकार समाजवाद को अपने ध्यान म बनाए रखे और उसे नकारे नही। लेकिन यदि वह समाजवाद को अस्वीकृत कर देता है—और इस बात पर मैं जोर देना चाहता हूँ—तो वह भविष्य की ओर से अपनी आखें मूँद लेता है, वतमान को सही ढग से मूल्याकित करने का अवसर खो देता है साथ ही वह शुद्ध गतिहीन निष्क्रिय कला के अलावा कुछ और रचने की योग्यता भी खो देता है।'

लूकाच के इस वक्तव्य मे दो महत्वपूर्ण निष्कर्ष हैं।

एक तो यह कि समकालीन बुर्जुआ साहित्य की मुख्य विषय वस्तु बुर्जुआ समाज की सामाजिक और विचारधारात्मक सरचनाओ पर सकट है।

दूसरा यह कि कोई रचनाकार यदि समाजवाद को दृष्टि से ओझल कर देता है तो वह न केवल वतमान बल्कि भविष्य को भी सही ढग से समझने की अपनी शक्ति खो देता है। इस अक्षमता की वजह से वह जो रचना करता है वह निष्क्रिय और चेतना के विकास के औजार के रूप मे अविश्वसनीय होती है।

साहित्य का चरित्र ही है अपने समय के सामाजिक सत्यो को प्रकट करना। आज यदि हम अपने समय के सामाजिक सत्य को पकडना और प्रकट करना चाहते हैं तो उसमे अन्तर्निहित बल्कि उसको गहरे तक प्रभावित करते राजनैतिक सत्य से साबका किए बिना हमारा काम नहीं चलेगा। सफल समाजवादी क्रातियो के बाद तो यह नाता और भी जरूरी हो गया है, जीवन

समाज मे निहित है, और समाज राजनैतिक सस्थाओ द्वारा परिचालित हो रहे है इसलिए किसी भी सोचने समझने वाले व्यक्ति के लिए राजनैतिक दृष्टिकोण रखना अवश्यभावी हो गया है।

जिनके पास इस दृष्टिकोण का अभाव होता है वे रचनाकार जीवन के प्रश्नो के स्थान पर मृत्यु के, जन जीवन के स्थान पर निजी अतरग की गहरी पर्तों के, सघष के स्थान पर पराजित मनोवृत्ति के और काल विशेष म स्थित सन्दभ के स्थान पर कालातीत सन्दर्भों के कलात्मक प्रश्नों से जूझते हैं और हताश होते हैं।

वे यह भी प्रचारित करते हैं कि विचारधारा से प्रभावित रचनाकार (यह मुहावरा केवल समाजवाद पर विश्वास रखने वालो के सन्दभ म प्रयुक्त होता है, मानो कि उसका विरोध करना किसी विचारधारा मे नही आता) प्रकृति की, प्रेम की, जटिल मन स्थितियो की निजी प्रसगो की रचना नही करते। वे इन्हें निषिद्ध मानते हैं और उनकी कविता मे केवल नारेबाजी होती है। ऐसे अवसरो पर वे बडी चतुराई से नोर्का वायरखो, पाल एलुआर, अतिया योसेफ हिक्मत, ब्रेख्त, नेरुदा, पास्तरनाक, अख्मातोवा, गिलविक आदि को भूल जाते है। वे उस जिजीविषा को भूल जाते हैं, जो सघष की कवितायो म रची बसी होती है। व यह भूल जाते हैं कि भारतीय परिवार के अंतरग और उत्कृष्टतम चित्र मुक्तिबोध और त्रिलोचन की कविताओ मे मिलते हैं, अपनी भरी-पूरी भावोच्छलता के साथ। सचाई तो यह है कि सचाई याद आने पर वे अपने मन के पट बद कर लेते हैं।

ये सब बातें औरो की तरह हम भी लगातार याद आती रही। दुनिया भर की कविता पढते पढते हम यह बात उजागर हुई कि इस सदी की सवश्रेष्ठ कविता उन्होन लिखी है जो समाजवादी समाज रचना पर गहरा विश्वास रखते है। आज भी उन्ही देशो म, उन्हीं भाषाओ म अपने समय की सवश्रेष्ठ कविता लिखी जा रही है जहाँ समाजवादी विचारधारा स प्रेरित जनसघष चल रहे हैं या जहाँ समाजवादी समाज हैं, चाहे वे पूर्वी यूरोप क देश हो या लैटिन अमेरिका के या अफ्रीका क। इसी अध्ययन क दौरान मुझे यह पता लगा कि इस सदी म जो मनुष्य की मुक्ति और बहुमुखी प्रगति

की सदी मानी जाती है—उन अनेक लोगो ने कविताएँ लिखी जो जनसग्रामो के अगुआ रहे। मनुष्य की मुक्ति के विश्वव्यापी सघर्षों को सभव बनाने वाले जिसदार्शनिक मार्क्स की अगुआइ मे मानवता आगे बढी वह स्वय कवि था, उपयासकार था। उनके अद्वितीय सहयोगी एगल्स भी कवि थे, इस क्रान्तिकारी सामाजिक राजनैतिक दर्शन को अपने जीवन-व्यवहार और कार्यव्यवहारो से, अमल से सिद्ध करने वाले लेनिन, माओ, हो ची मिन्ह, चे ग्वेवेरा, आगस्तिनो नेटो, सैंघोर कवि भी थे। ये सघर्ष करते जाते, यातनाए सहते जाते, युद्ध का नेतृत्व करते जाते और साथ ही उसी त्वरा से कविताएँ रचते जाते। प्रकृति की, प्रेम की, सघर्ष की, विश्वास की। इनकी कविताएँ पढकर फिर हमारी यह धारणा पुष्ट हुई कि कलात्मक सजन यथार्थ को प्रतिबिम्बित करने के साथ ही उसे अनुभव करने तथा पहचानने का एक विश्वसनीय साधन भी है। वह न केवल अपने बल्कि अपने से जुडे तमाम लोगो के आत्मिक विकास पर प्रभाव डालने वाले सबसे शक्तिशाली उत्तेजको मे से एक है।

इसमे कोई सदेह नही कि ये कविताएँ उन अद्वितीय व्यक्तियो के हृदय की कलात्मक झाँकी पेश करती हैं जिनके प्रयत्नो से बहुत थोडे समय मे समाज ने ऐसे मूल्यवान, प्रगतिशील परिवर्तन किए जितने मानव जाति ने इसके पूर्व कभी नही देखे थे।

एगल्स ने १५ वी सदी के पुनर्जागरण काल के महान साहित्यकारो कलाकारो की चर्चा करते हुए कहा था—

'उस युग के नायक अभी तक श्रम-विभाजन की दासता से नही बँधे थे। जिसके एकागीपन पैदा करने वाले सकुचनकारी प्रभाव हम उनके उत्तर वर्तियो मे प्राय पाते हैं। उनकी सबसे बडी विशेषता यही थी कि प्राय ये सब समकालीन आन्दोलनो के बीच, व्यावहारिक सघर्षों के बीच ही जीवन यापन तथा क्रियाकलाप करते थे। वे किसी न किसी पक्ष की ओर स लडाई मे शामिल होते, कुछ बोल और लिखकर लडते थे, कुछ तलवार लेकर और कुछ दोनो तरीके से। इसी से उनमे चरित्र की वह पूर्णता और ओज थी जिसने उन्हें पूर्ण मानव बनाया।'

इस सग्रह मे जिन कवियो की कविताओं के अनुवाद सकलित हैं वे

सभी 'पूण मानव' थे। वे सभी मनुष्य की समता, उसकी सधष क्षमता और उसकी मुक्ति पर दढ विश्वास रखत थे। इसीलिए उनकी कविताएँ किसी भी अकेले राजनेता या पत्रकार या इतिहासकार से ज्यादा अपन समय की सचाई को प्रकट करती हैं। ये प्रामाणिक दस्तावेज हैं।

ये सभी अनुवाद अँगरेजी से किए गए है और मुझे यह मानने मे कोइ सकोच नही है कि इस प्रक्रिया मे कविताओ की मूल सरचना, लय तथा सवेदनात्मक क्षमता भी बहुत घटी होगी। फिर भी इन साहित्यिक दस्तावेजो को व्यापक पाठकवग तक पहुँचाने के लोभ पर मै काबू न पा सका।

कविताएँ लगभग पाच वर्षो से तैयार थी लेकिन उनके छपने का योग अनायास आ गया। मध्यप्रदेश प्रगतिशील लेखक सघ १४ १५ मई ८३ को भोपाल मे महत्व डॉ० रामविलास शमा' आयोजित कर रहा है। सबकी राय हुई कि इस अवसर पर यह किताब जारी होनी चाहिए। रामविलास जी के अवदान का यह विनम्र स्वीकार होगा। इसीलिए तजी स पाडुलिपि तयार हुई। भाई कमला प्रसाद और सहाय जी जोर न देत तो शायद कुछ और बरस लग जाते इसे सामन आन म।

बहरहाल सकल्पधर्मा चेतना के ये स्वर सभी साथियो को समर्पित हैं।

—सोमदत्त

---

१ जाज लूकाच 'रियलिजम इन अवर टाइम १८६४,

२ एलेन बोल्ड पेंगिन बुक आफ सोशलिस्ट वस की भूमिका मे मावस एगलस

३ साहित्य तथा कला—पृ० २६० २८१

कविता क्रम





कार्ल मार्क्स

भावनाएँ

नही शांति से कर सकता मैं
वह तक जिसमे लगन लगी है
सहज भाव से ले न सका कुछ
बढते जाना बेकल मेरी मजबूरी है।

लोग उल्लसित होते तब, जब
आसानी से घटती चली जाएँ घटनाएँ
भर जाते हैं आत्मप्रशसा के भावो से
आभारो से भर जाती उनकी प्रार्थनाएँ

मेरा मन तो फँसा अनत छटपटाहट मे
लगातार विक्षोभो, अतहीन सपनो मे
जीवन के साँचे मे ढलना मेरा असभव
मुश्किल बहना मेरे लिए धार धारो मे।

करूंगा साकार स्वर्ग को मैं धरती पर
खीचूगा दुनिया को बेशक अपनी ओर मैं
घृणा से कि प्रेम से चाहता यही हूँ मैं बस
दमके नक्षत्र मेरा विलक्षण प्रकाश से

नष्ट कर दूगा ससार सदा के लिए यह
क्योकि रच नही सकता नया ससार मैं
क्योकि नही देते कान मेरी पुकारो पर वे
धँसते चले जाते है जो तिलिस्मी भँवरो मे

करूँगा प्रयत्न हासिल करने की तमाम सब
आशीषें हैं जितनी नियति के खजाने मे
करूँगा हासिल गहरे से गहरा ज्ञान
थाहूँगा गहराइयाँ स्वरो की, कलाओ की

भर कर तिरस्कार से हमारे कामो के प्रति
निर्जीव और गूगो से फेर लेते हैं आँखें वे
लगता घुन हम सबको, हमारी कृतियो को
निर्विकार बढते चले जाते अपनी राहो वे

गर्क जो अपनी तडक-भडक और झूठे घमड मे
धीरज धरे, जीवन बिता देते जो सहजता से

बनूंगा नही कभी उनका सहयात्री मैं
बहूँगा नही कभी बहती हवाओ मे ।

आता है समय भव्य सभागार और बुज
ढह जाते, चूर चूर हो जाते चुटकियो मे
और खडे हो जाते है नए साम्राज्य वही
उसी क्षण, घूरे से उपजे खालीपन मे ।

ऐसे, ऐसे चक्की चली वरस दर वरस यहा
सिफर से सरवस तक, सरवस से सिफर तक
पालने से अर्थी तक
अन्तहीन उन्नति और पतन अन्तहीन

ऐसे, ऐसे, प्राप्त करती है आत्माएँ अपना अत
चुकने तक ।
अपने मालिक मुख्तारो अपने महाप्रभुओ को
समूचा नष्ट करने तक ।

इसीलिए, आओ पूरा करे साहस से
चक्र जो निर्धारित किया ईश्वर ने
सुख को दुख को झेलते वरावरी से
भाग्य को पेंगे मार दोनो दिशाओ मे ।

इसीलिए, आओ लगा दें सब दाव पर
जूझे लगातार पल भर भी थके बिना
खामोश निराशा या उदासी में गोते न लें
हों न कभी कर्महीन, आकांक्षाहीन हम।

पीडा के जुए के बोझ से दबकर अपने
डूब न जाएँ कहीं घुन्ने आत्ममथन मे
वरना अतृप्त रह जाएँगी सदा के लिए
लालसाएँ, गतिविधियाँ, गाथाएँ सपनों की।

(१८३६)

जेनी के लिए

जेनी ! दिक करने को पूछ तुम सकती हो
    संबोधित करता हूँ गीत क्यो 'जेनी' को,
जबकि तुम्हारे ही खातिर होती मेरी धड़कन तेज,
जबकि कलपते हैं बस तुम्हारे लिए मेरे गीत,
जबकि तुम, बस तुम्ही, उन्हे उडान दे पाती हो,
    जबकि हर अक्षर से फूटता हो तुम्हारा नाम,
    जबकि स्वर स्वर को देती हो माधुर्य तुम्ही,
    जबकि साँस-सास निछावर हो अपनी देवी पर !
इसलिए कि अद्भुत मिठास से पगा है यह प्यारा नाम,
    और कहती हैं कितना कुछ मुझसे उसकी लयकारियाँ,
इतनी परिपूर्ण, इतनी सुरीली उसकी ध्वनियाँ
ठीक वैसे जसे कही दूर, आत्माओ की, गूजती स्वर वलियाँ
    माना कोई विस्मयजनक अलौकिक सत्तानुभूति,
मानो राग कोई स्वर्ण तारो के सितार पर !

(१८३६)

तीन नन्हीं जोतें

दूर झिलमिलाती है तीन नन्ही जोतें
लगता, चमक रही हैं आँखें तारो भरी,
तूफान कूट ले माथा, चीखे हवाएँ जी भर,
बुझने वाली नही, वे नन्ही जोतियाँ ।

जझती एक मजो-मजो उठती ऊँचे से ऊँचा,
सर करना चाहती हो, थरथराती हो स्वग को
झपकाती पलके अपनी इतने गहरे विश्वास से,
देख रही हो मानो साक्षात-आँखो स ब्रह्मा को

देख रही दूसरी, विस्तार पृथ्वी के ।
सुनती स्वर गूंजते हुए विजयी नारो के,
मुडती है अपनी गगनवासी बहनो की ओर,
मानो अनुप्राणित मौन आकाशवाणी मे ।

अतिम, जल रही है सुनहली लौ से,
उछल-उछल पडती हैं लपटें, गोते लगाती हुई,
घुप जाती हैं लहरें उसके हृदय मे और-देखो तो—
उभरती हैं कैसे, फूलो लदा वृक्ष वन ।

ऐसे ऐसे, दिपदिपाती खामोशी से तीनो नन्ही जोतें
बारी बारी से लगती मानो आंखें हो तारो भरी
तूफान कूट ले माथा, चीखें हवाएँ जी भर,
एक हुई दो आत्माएँ प्रमुदित हो गई अब ।

(१८३७)

चिकित्सा शास्त्र के विद्यार्थी को तत्व-मीमांसा

आत्मा वात्मा थी ही नही कभी,
सांड रहे हर-हमेश अनुभव किए बिना कभी भी, कमी उ
निकम्मी फन्तासी है आत्मा,
        पेट मे तो खोजी ही नही जा सकती वह,
        और गर कोई उसको, सत्य सिद्ध कर भी दे
अंड बंड गोली भी छूमंतर कर देगी उसे,
फिर नजर आएगी आत्माएँ
उभरती अंतहीन प्रवाह मे

चिकित्सा शास्त्र के विद्यार्थी का मनोविज्ञान

करेगा बियारी जो मालपुओं और गुलगुलो की
भोगेगा बिमारी-दुःस्वप्ना, हुलहुलो, पुलपुलो की,

(१८३७)

आचार सहिता चिकित्सा शास्त्र के
विद्यार्थियो की

पसीना नुकसान करे बेहतर है इससे तो
पहनना एक से ज्यादा बडियाँ यात्राओ मे ।
सावधान रहो उन तमाम लालचो से जो
पैदा करें गडवडिया तुम्हारे जठर-रस के लिए
ऐसी जगहो, फटकने मत दो अपनी नजरे,
शोले उठा सकती हो जो तुम्हारी आखो मे ।
पानी मिलाओ शराव मे,
काफी मे हर बार लो दूध,
और भूलना मत हमे याद करना भाईसा'व
करने लगो कूच जब दूसरे जहान को

(१।

गणितीय चतुराई [illegible]

घटा लिया है हमने हर चीज को चिन्हो मे
और तर्क करते यो पेश, जैसे सूत्र गणित के भिन्नो मे।
ईश्वर अगर विन्दु है, तो लम्ब के समान गुजर नही सकता वह
जैसे, आप खडे नही हो सकते सिर के वल, बैठे चूतडो पर।

(१८३७)

ग्लक महानुभाव का नृत्य-नाट्य

(१)

इच्छा हुई मजे लेने की सो मैंने फिर
'शो' के खातिर की न कोताही कुछ पैसो की ।
टांगी अचकन लालटेन के उजियारे मे
और घुसा उस रात निकटतम नाटक घर मे
उम्मीदो से कुछ बदतर ही बीती मुझ पर,
उफ ! कैसा तो कोसा मैंने खुद को कुढ कर,
वोनी बि'ना मुझे थमाकर, पकडो तो
सगीत-पाठ यह, भुनका मैं 'हाय ठिठुरते हैं मेरे तो !'
'तो फिर तुम पहनो दस्ताने !' बोली देवी
'लगता मेरा सिर चकराने !' मैं बोला ।
उनने की निवसन ग्रीवा अपनी, वक्ष और सब बाकी माल
हुक्म दिया फिर मुझे, रखू नजरो मे अपनी उनका शाल,
बोला तब मै उन देवी से ! 'आंच आग की बेहद मद्दी
और गोश्त जो देखू कच्चा, मुझे बहुत चक्कर आते है !'

चीखी वे 'दिव्य नही था नृत्य-नाट्य क्या ?'
बोला मैं, 'हे ईश्वर ! आज गजट मे क्या कुछ ऐसा पढने लायक
जिसको पढकर, काट सकूँ यह समय बीच का ?'

(२)

बैठा था, सगीत सुरो मे अतल डूबकर सम्मोहित मै
बोली कुढकर 'मूरख भी है यह घनचक्कर !'

(१८३७)

फ्रेडरिक एंगल्स

किताबी ज्ञान

पोथो वाच-बांच कर जिसने किया इकट्ठा
फेन अकारथ पाडित्य के सैलावो का
होता है विद्वान नही वह,
ज्ञान कोष के बावजूद, गूढ नियम जीवन के होगे
उसके बूते के बाहर ही सदा ब द पुस्तक के जैसे,
लगा पाठ्य पुस्तक का घोटा, शास्त्र वनस्पतियो का पीकर
स्वर अंकुराती हरी दूब के, सुन वह कभी नही पाएगा,
और न द पाएगा सीख सचाई की वह, जो
उडेलता ज्ञान आप पर, अपने थोथे सिद्धान्तो का
अगर चाहते है जीवन की कला जानना तो झांकें खुद अपने मन मे,
सच मानें, कीटाणु छिपे रहते मनुष्य के ही अतर मे,
पा न सकेंगे जीवन भावो के अनुशासन का रहस्य हम
रात रात भर रट फूककर,

डूब गया वह जिसने सुनी पुकार हृदय की—
फिर भी की अनसुनी, और अर्थ का कर अनर्थ बस मनमानी की,
हैं विद्वत्ता, उदात्तता के जितने सारे शब्द-समुच्चय
है उन सबमे गहन ज्ञान मानव-विवेक का।

(१८३६)

दुश्मन

चलता है ठीक ठाक जो उसको
छोड क्यो नही सकते तुम उसके हाल पर।
जारो, क्यो रहने नही देते सच्ची कोशिशे
नम्रता से कहे गए सदाशय शब्द ही क्या—
कर देंगे पूरे, अच्छे काम, जिन्दा लोगो के।
आसान है जुटाना
लोगो के सच्चे इरादो को झुठलाने के सरजाम
नजर आ जाती है बहुत जल्द बुराई अच्छाई मे
लेकिन भलाई मे बुराई को बदलोगे नही कभी तुम।

या कि तुम सजोदगो से करते हो उम्मीद
फायदा उठाने की, मजाक उडाकर
दूसरो की कोशिशो का, अगर चाहते हो इज्जत
तो हासिल करो उसे अपने भले कामो से,
काम म लाओ अपना दिमाग, अगर सफल होते हो

तैयारी रखो ऊपर चढ़ने को,
अगुआ लोगों की पूछ से बँधने,
उन्हें नीचा दिखाने मे, नष्टकर रहे हो तुम अपना समय
बोलो पहुँचा सकते हो क्या तुम, नुकसान उस डाकिए को
थूकते हो जिसके ऊपर अपनी आँखो से।
ढोता है वह खबरें, जाने दो उसे तुम
नियमोचित राह पर जसे भी बने उसमे,
लाना है यदि सत्य वह, बेशक हावी हो जाएगी सच्चाई
छल कपट और विश्वासघात पर,
सचाई प्रकट करती है, पुरानी, चतुराई भरी कहावत
'ईमानदारी खुद पुरस्कार है अपने आप मे'।

(१८३६)

मूंछें

मूंछ गौरव रही सदा, बहादुरों
भले मानसों के लिए देश देश में,
चलते थे दुश्मनों का सामना वीर सेनानी
मूंछें या काले गलमुच्छे फहराते हुए
इसीलिए सामरिक सेना वाले इन जमानों में
अनिवार्य हैं मूंछें,
करके सजावट अपने ओठ चोटियां जैसे
जान पड़ते हैं विलक्षण सेना के पास से,
नहीं हम विद्वानगण,
हम तो बढ़ायेंगे अपनी मूंछें खूब
उस समय हो हर तरह ढिलाई की
धारण करें जो मूंछें सारे न मर्द भी,
और मर्द हों वे समस्त विद्वज्जन लोग आज
जिनके मुंहाई मूंछें और जिनमें नहीं दाढ़ियां।

एक शाम

लगभग तिरोहित हो चुकी है दीप्ति
पश्चिम की,
धीरज रखो, आता है नया दिन—मुक्ति दिवस ।
आरोहित होगा सूर्य फिर सदालोकित सिंहासन पर
और स्याह चिताएँ रात्रि की
अस्त हो जाएँगी,
खिलेंगे नए फूल किन्तु क्यारियों में नहीं
खटाया हमने खुद को, बोए जो चुनिन्दा बीज
उजाले से सराबोर उनके लिए होगी, बगिया
समूची पृथ्वी ही ।
पनपेंगे पौधे दूर दूर अनजानी भूमियों पर,
शांति का ताड़ शोभा बढ़ाएगा उत्तरी छोर की,
बर्फानी ऊँचाइयों का मुकुट होगा प्रेम का गुलाब,
निरंकुश लोगों को ठिकाने लगाने वाली गदा बनने के लिए
मजबूत ओक अपनाएगा दक्षिण के तट को,
और वह जो कायम करेगा शांति फिर अपने देश में

पहनेगा मुकुट बलूते के पत्तो का,
समूची धरती पर छाई अगरू गध, है बिल्कुल
जन-जन की अतरात्मा के समान,
वैसी ही कटीली, खुरदरी और ठीक वैसी भव्यताहीन,
जब तक कि अचानक किसी विस्फोट से फूट पडे उसमे से
दूर करती बाधाएँ खिलती ज्योति शिखा
मुक्ति-जोत, जलती हुई थी जा आँखो की ओट मे।
तमाम पवित्र पाखन्डो से ज्यादा, सभावना है
उसीकी गध के पहुचने की, परमात्मा तक,
अकेले रह जाएँगे, परित्यक्त सरू के वृक्ष ही
उपवन मे, अर्थ खो देने के कारण,
अपनी अदृश्य मेहरावे तानेगा, पुल प्रेम का
हर हृदय के आरपार, खम्भो के बीचोबीच
बहती है उद्दाम आवेश से भावनाएँ, वेग भरी धाराएँ,
फुरती से गुजर जाते है प्रचण्ड प्रवाह वर्षो के,
पुल सख्त है हीरे सा धँसेगा नही वह,
जाता है आरपार निभयता से चमकदार ध्वज मुक्ति का,
जाता है आरपार आदमी, ले जाते जहाँ उसे, उसके पाँव,
फेंकता हैं जहाँ भी दृष्टि वह मनचाहे,
मिलता है छप्पर उसे टिका आसमान से,
जहाँ, जानता है वह रोटी औ पानी मिलेगा उसे,
घर से दूर घर उसकी राह देख रहा है,
जिधर जी चाहे डाले बिछौना और फलाते पाँव वह,
सेतु शुद्ध-सम आस्था का बँधेगा बादलो को,
चढेगा उस पर मनुष्य, चढता जाएगा निर्भय

लेनिन

सघर्ष

तूफानी माल वह, आंधी की
चपेट मे पूरा देश, वादल छँटे
टूट पडा तूफान हम लोगो पर,
उसके वाद ओले और वज्रपात
चोट पर चोटें सही घावो ने
खेतो मे गावो मे
विजली चमकने लगी
खूंखार हो उठी वो चमक
दहकने लगी आग और
दम घुटने लगे।
लेकिन उस चमक ने आलोकित कर दिया
सन्नाती काली रात को,
तितर वितर हो गई थी, दुनिया, लोग बाग
दिल वैठने लगे डर से
घुटने लगी पीडा से साँस सास

भिच गए ओठ मुरझाये चेहरो के
होम दिए प्राण हजारो शहीदो ने उस खूनी तूफान मे
व्यर्थ ही नही भोगे उनने दुख,
व्यर्थ ही नही पहना मुकुट काटो का,
गए मशाल की तरह जलते हुए वे
फरेबियो की भीड चीर
अधकार और झूठो के राज्य से गुजरते हुए
भविष्य मे
अग्नि की आभा के अखण्ड ज्योति वलय मे
आलोकित उनके चिन्ह
बलिदानो के पथ पर
गुलामी के जुए
बेडियो की शर्मिन्दगी पर
जिन्दगी के खाके पर
छाप दिए उनने अपनी नफरत के निशान।

मई के किसी भुनसारे सा सुख सूर्य
ऊगा अनमने आकाश मे
चमकते सूरज ने किरणो की तलवार से
चीर डाला बादलो को, फाडा कुहरे का कफन
गहरे समन्दर मे 'समुद्र-ज्योति' के उजाले सी,
प्रकृति की हवन वेदी मे अजाने मत्रोच्चार से
प्रज्ज्वलित की गई शाश्वत अग्नि जैसी
उस उज्ज्वल ज्योति ने

जगाया सोए आदमियो को
उछाह भरे खून से सिच गए गुलाब
विस्मृति मे खोई समाधियो को
प्राप्त फिर प्रतिष्ठा हुई।

मुक्ति वाहिनी के साथ
फहराकर झडा लाल
यो उमडा जन-प्रवाह
मानो फूट निकला हो सोता पानी का
छा गया जुलूस पर लाल ध्वज
गूज उठा आसमान मुक्ति के मन्त्रो से
सताप के आसू बहाते, बलिदानियो की स्मृति मे
गाने लगी जनता शोक गीत।

लबालब खुशियो से
आशाओ और सपनो से भर गया हृदय जन-जन का
बूढो, बच्चो सभी ने
विश्वास दिया अपना दस्तक देती स्वाधीनता को।
लेकिन उधर छिपकर बैठी थी
ताकतें अँधेरे की
घात लगाए, फुफकारें मारती
रेंग रही थी वे सीने के बल धूल मे,
यकायक धँसाए उन्होने छुरे और दांत

वीरो की पीठो और पिडलियो पर
ताजा गर्म खून पिया जनता के दुश्मन ने
अपने घिनौने मुँह से,
चकनाचूर कठिन यात्राओ की थकान से
उबासियाँ ले रहे थे जब उनीदे, निहत्थे
मुक्ति के निश्छल साथी
धोखे से तभी आक्रमण हुआ उन पर
अनन्त अपशकुनो भरे अँधेरे दिन
घिर आए
गए उजालो के दिन
डूब गया मुक्ति सूय खत्म हुई रोशनी
शेप रह गई उस अँधेरे मे वस विषाक्त दृष्टि ।
घिनौने हत्याकाड,नस्लवादी अत्याचार, बौछारें गालियो की
शुरू हुई राष्ट्र-प्रेम के नाम पर,
उत्सव मनाने लगे काले प्रेतो के गिरोह
जुटे हैं वे नेस्त नाबूत करने मे लोगो को
भरे प्रतिशोध से
अकारण निर्दयता से ।

कुचल गए पैरो तले फूल आजादी के
नष्ट हो गया सब कुछ, ढह गया सूत-सूत
मन के काले खुश हैं
देख-देख भय डूबे उजले मन ससार को
मगर बीज उस फूल का

पहुँच गया है जन्मदात्री माटी की कोख मे
जीवित रखे है वह विचित्र कण खुद को
गहरे रहस्य सा ।
ऊर्जा देगी उसे माटी, देगी ताप
और वह ऊगेगा
ऊगेगा एक नया जन्म ले
लाएगा वह तैयार बीज नई आजादी का
चीरेगा वर्फ की चादर वह
फैलाकर अपने लाल पत्ते वह विशाल वृक्ष
पनपेगा,
उजाला देगा दुनिया को,
इकट्ठा करेगा वह अपनी छाँह तले
सारे ससार को, जन-जन को

हथियार लो साथियो ! करीव है सुख के दिन
तानो सीना हिम्मत से ! कूदो, आगे वढो सग्राम मे ।
जगाओ अपने मन को ! निकालो चित्त से
घटिया कायराना भय !
शक्तिशाली करो अपना दल ! मुख्तारो, तानाशाहो के विरुद्ध
एक जुट हो जाओ
तुम्हारी ताकतवर मजदूर भुजाओ मे भरी है विजय
तानो हिम्मत से सीना ! पूरे होगे जल्द अब बुरे दिन ।
एकजुट होकर खडे हो जाओ 'मुक्ति के दुश्मनो' के खिलाफ ।

आने को है वसत "आ ही रहा है वह आया वह
अपनी चहेती, अनोखी, अप्रतिम लाल स्वाधीनता वह
बढ रही है हमारी ओर

तानाशाही,
राष्ट्रवाद,
कठमुल्लेपन ने,
सही-सही जाहिर कर दिए हैं अपने गुन
इनकी दुहाई दे उन्होने —
मारा, मारा, मारा हमे
चाथ डाला हाड माँस तक उनने किसानो का
तोड दाँत
कब तक पहुँचाया उनने बंदियो को कारागारो के भीतर,
लूट-खसोट को कत्ल किए हैं उनने
हमारी भलाई के लिए कानूनन
जार की शान मे, जारशाही की प्रतिष्ठा के वास्ते ।

डुबा दो अपने पछतावे को, अरे फौजी भाइयो,
गिलास भर वोदका मे ।
अरे शूरवीरो, चलाओ गोली बच्चो, औरतो पर !
खत्म करो ज्यादा से ज्यादा भाई-बन्दो को तुम अपने
ताकि हो सके प्रसन्न तुम्हारा धर्म पिता।
और गर तुम्हारा बाप गिर पडे गोली से
डूब जाने देना उसे खून मे

क्योंकि रँगे है हाथ उसके भी खून से
जार की शराब पी दानव बन
हत्या करो निर्ममता से तुम अपनी माता की !

अपने जल्लादो के बूते, ओ तानाशाह !
मना अपना खूनी त्योहार
अरे नरभक्षी, नुचवाकर जनता का मास
अपने लालची कुत्तो से, खा !
ओ तानाशाह, वो दे आग !
पी, पी हमारा रक्त, ओ हैवान !
मानव के मुक्ति-युद्ध, जागो !
उडो ! लाल निशाँ, उडो !

लो डटकर लो बदला, दड दो
सतालो हमको अतिम बार !
करीब है समय तुम्हारे दडित होने का
फैसले का दिन आ रहा है, भूलो मत
आजादी के लिए, हम जाएँगे मुह मे मौत के
छीनेंगे किन्तु सत्ता और आजादी, उसी मौत के मुंह से।
दुनिया जन-गण की होगी
अनगिनित लोग काम आएँगे
असफल सग्राम मे
फिर भी बढते रहेगे हम
स्वाधीनता की ओर !

मजदूर भाइयो ! आगे बढो !
युद्ध को जा रही है तुम्हारी सेना
श्रम की स्वतत्रता के खातिर
आग उगल रही हैं उनकी आँखें,

नगाडे बजाते चलो आसमान तक
मृत्युजित नगाडा परिश्रम का
चोट करो हथौडे, चोट पर चोट करो लगातार
अनाज ! अनाज ! अनाज !
बढ चलो किसानो, बढे चलो
जी कैसे सकते हो तुम बिना जमीन के
क्या अब भी दबाता रहेगा मालगुजार तुम्हे ?
क्या अब भी पेरते रहेंग तुमको ये सभी ?
बढे चलो छात्रो ! बढे चलो !
काम आएँगे कई तुममे से जग मे।
जग मे शहीद हुई फौजो के शव
लाल फीतो मे लपेट कर रखें जाएगे

बढे चलो भूखा ! बढे चलो !
बढे चलो सताए हुए लोगो
आगे बढो अपमानित जन
मुक्त जीवन की ओर !

अपमानित करते हैं हमे

गदन पर रखे हुए ऊँचे वर्गों के
चलो, खदेड़ें चूहों को उनके बिलों मे
चलो लडाई मे, सर्वहारा !

नाश हो इस दुख दर्द का
नाश हो जार का, उसके ताजो तख्त का
देखो, वह देखो, तारों भरा मुक्ति का भिनसारा
छिटक रही देखो कसी उसकी आभा
उभर रही है आंखो मे जनगण की रोशनी
खुशहाली की सच्चाई की
प्रकाशित करेगा हमे चीरकर बादलो को
मुक्ति का सूरज।

विक्षिप्त घटा जोश भरे स्वरा मे
पुकार लगाते हुए आजादी की
कहेगा जार के पिट्ठुओ से—
    दूर हटो, भागो तब यहा से

अत्याचार, निर्जनता,
कोडे, फाँसी का तख्ता मुर्दाबाद !
मानव मुक्ति के सघर्ष, बन्धन तोडो
ताकि नष्ट हो अत्याचारी।
आओ जड से खत्म करे
तानाशाह की ताकत को।

सम्मान है मरना आजादी के लिए
शर्मनाक है जिन्दगी बेड़ियो जकड़ी हुई।

आओ नष्ट करें पराधीनता को,
पराधीनता की शम को
है मुक्ति
सौप हमे ससार और स्वाधीनता।

माओत्से-तुंग

तापोती

लाल, नारगी, पीला, हरा, आसमानी, नील नीला, बैंगनी—
कौन नाच रहा है, रगीन फीते फहराता यो आसमान मे ?
चौमासे बाद लौटता है सूर्य तिरछा-तिरछा
पर्वत शिखर-घाटियां हो जाती हैं गहरी नीली
शोभा बढा रही है पहाडियो और दर्रे की
देते हुए उनको दूनी मनोहारी छवि
हुई थी कभी यहाँ जग घनघोर बडी
गोलियो से छिदी थी दीवारें गाँव की।

(१९२३)

चांगशा*

खड़ा हूँ अकेला मैं ठड मे शरद ऋतु की
अतिम छोर पर नारगी द्वीप के
उत्तर दिशा की ओर बहती जा रही है शियाग,
देख रहा हूँ बीहड गाढे रगारग वनो की आभा
किरमिजी हुई हज्जारो चोटियाँ,
निर्मल नील लहरो पर
आपस मे करती सैकडो नौकाएँ होड उल्टी धाराओ से
चीरते हवाओ की गरुड
डुबकियाँ लगाती गहराई मे, उछलकर मछलियाँ
हिमदग्ध आकाशो तले हर चीज छटपटाती मुक्ति के खातिर

इस विराट से एकाकार सोच मे डूबा मैं
उठाता हूँ प्रश्न 'इस अनत पृथ्वी पर,
तय कौन करता है नियति मनुष्य की ?

इसी जगह कभी, था साथियो की भारी भीड सहित
ताजे हैं अब भी गहमागहमी भरे वे बरस माह,
थे हम युवा, सहपाठी
खिलती जवानी मे,
छात्रोचित साहस भरे
दृढता से दूर की हमने वाधाएँ तमाम,
अपने पहाडो और नदियो की ओर उँगलियाँ उठा,
फूकी आग लोगो मे अपने शब्दो से,
कृता नही महाबलियो को फूक से ज्यादा कभी
याद है ?
बीच मझधार मुठभेड हुई पानी से
चोटें कर रही थी कैसी लहरे क्रुद्ध बढती नौकाओ पर ।

(१६२५)

*चागशा चागशा हुनान प्रदेश की राजधानी है। यह नगर शियाग नदी के किनारे बसा है। इस शहर म और उसके आसपास माओ ने अपना विद्यार्थी जीवन गुजारा था।

चिंग काग शान

फहराते हमारे ध्वज औ बैनर तलहटियो मे पहाडियो के,
चोटियो पे गूंजते है, नगाडे-बिगुल अपने,
घेरता हमे दुश्मन हजारो की तादाद मे
दृढता से डटे हम फिर भी अपनी जमीन पर,
अभेद्य है पहले ही हमारी सुरक्षा-पक्ति,
एकजुट हो गई अब इच्छा शक्तियाँ भी दुग सी,
उठती है हुआगशिह से दगती तोपो की गर्जना
आई है खबर-रात के अँधेरे मे, भाग गया है दुश्मन।

(१६२८

पर्वतमाला   तीन कविताएँ

एक

पर्वतमाला,
चाबुक लगाता हूँ अपने तेज घोडे को, जीन-काठी से चिपका मैं
चौंक कर देखता हूँ पलटकर
महज तीन फुट-तीन ऊपर है मुझसे आस्मान

दो

पर्वतमाला !
ज्वार पर आई विराट सिंधु लहरों सी
भरे समर दौड रहे सरपट कदडम-कडदम कदडम
हज्जारो घोडो की भरपूर टापो सी

तीन

पर्वत मालाओ
वेधते लगातार स्वर्ग की नीलाभा, भोथरे नहीं हुए फिर भी
तुम्हारे बरछे ये

टपक पड़े आसमान
अगर सहारा न हो उन्हें तुम्हारी ताकत का

(१९३४-३५)

लुशान दर्रा*

उग्र है पछुआ
किकियाती वनहंसिनी तुषार सजी भोर के चाँद की छायाभा मे
तुषार सजी भोर के चाँद की छायाभा मे
गूंज रही हैं टापें घोड़ो की
सिसक रही हैं बिगुलें दबे स्वरो मे,
फाँकी है निकम्मो ने कि बनी हैं उस दर्रे की दीवारें, लोहे की

पार कर रहे हम दृढ कदमो से उसका शिखर
लाँघ रहे हैं हम सब उसका शिखर

सिंधु नील है ढलानें
अस्तासन्न सूर्य है रक्त-वर्ण

(१६३५)

---

*लुशान दर्रा क्वेई चो प्रदेश में स्थित है। जनवरी १६३५ में यहाँ चीन के साम्यवादी दल का एक सम्मेलन हुआ था जिसमें माओ पोलिटब्यूरो के चेयरमैन चुने गए थे।

कुनलुन

ऊपर खूब ऊपर धरती से, चूमते नीलाभा
तुमने, ओ वनवासी कुनलुन, देखा है
वह सब जो श्रेष्ठ था मानवमय ससार मे
तुम्हारे तीस लाख श्वेत-हरित उडते परदार सर्प
गला देते है आसमान को भी ठड से
और गर्मियो मे पिघलती तुम्हारी वेगवान धाराएँ
पूर ला देती हैं नदियो नालो मे,
कछुओ, मछलियो मे बदलती मनुष्यो को
सिरजी तुमने शरद ऋतुएँ हजारो से
किसने किया निणय भले और बुरे का ?
उसी कुनलुन से कहता हूँ आज मैं
जरूरत नही
तुम्हारी इस तमाम ऊँचाई या
तुम्हारे तमाम हिम को,
स्वर्ग पर सवार हो खीच सकू गर तुम पर अपनी तलवार मैं—
तुम्हे चीरूँगा तीन मे

एक फांक यूरोप के वास्ते,
एक अमेरिका के,
एक पूरब मे रखने के लिए
तब तमाम दुनिया मे शांति का होगा राज्य
समूचे भूमडल पर होगी एक सी ठडक और एक सी गरमाई

(१९३५)

कवि की टिप्पणी किसी पुरातन कवि ने कहा था तीस लाख श्वेत उड़ते परदार सर्प कर रहे थे युद्ध जब हुआ उनके उड़ते परखचो से भरी थी, इस तरह उनने हिमपात का वर्णन किया था, बर्फ ढँके पर्वतो का वर्णन करने के लिए यह बिम्ब मैंने वहीं से लिया है, गर्मियों में यदि कोई मिनशान पर्वत चोटी पर चढ़कर देखे तो उसे कई पर्वत शिखर दिखाई देंगे सभी नर्तन सह्-रिम जैसे सूरज में मगन हो।

लियू-या-त्जू को जवाब

लम्बी बहुत लम्बी थी रात, भोर बहुत धीरे-धीरे
उतरी इस किरमिजी धरती पर
नाचते रहे शताब्दी भर दानव-दैत्य मगन हो
वहशी नृत्य
और टुकडो मे बँटे रहे पच्चास करोड जन
अब बाँग हो चुकी है, अब मुर्गे की ओर चमक रही है
हर चीज नीली छतरी तले,
यहाँ गूँज रहा है सगीत अपने जन-जन का, 'यूतिएन' जन का भी
और अनुप्राणित है कवि अपूर्व प्रेरणा से

(१६५०)

लियू या-त्जू की कविता

प्रदर्शन धधकते वृक्षों और रजतपुष्पों का
रात्रि अंधकार हीन
थिरक रहे हैं भाई बहन लालित्य से नृत्य में
धुन पूरे चाँद की फैलती है प्रसन्नता से भरकर
लेकिन उस एक व्यक्ति के चतुर नेतृत्व बिना
हो पाती कैसे एकजुट सौ-सौ कौमें ?
उत्सव प्रसन्नता के इस पर्व का अपूर्व है।

सिक्याग प्रदेश म गाया जाने वाला एक लोकगीत 'पूरा चाँद' कहलाता है।

तैरना*

चांगशा का पानी पिया है अभी मैंने
फिर आया हूँ मछलियां खाने वूशाग की,
तैर रहा हूँ महान याग्त्सी के आरपार अब
नजरें गडाए दूर-खूब-दूर बसे चू के खुले आकाश पर,
आये, छायें झझावात, लहरो पर उठे लहरे,
बेहतर है यह, आँगन मे टहलने से
आज शात मेरा मन
जलधारा के किनारे ही खडे होकर बोले थे विद्वत्जन
इसी तरह बहते बहते चोजें दूर चली जाती है

हिलते हैं पाल, सग-साथ हवाओ के
निष्पद हैं कछुए और सर्प,
महान योजनाएँ शुरू हो चुकी हैं
उडेगा एक पुल पाटने को दूरियां उत्तर और दखिन की
बदलते गहरी घाटी को एक आम सडक मे,

झेलने के लिए मेघ और वारिशें वुशान की
उठती जाएँगी पत्थरो की दीवारें ऊपरी वहाव मे पच्छिमी
किनारे पर

जव तक एक गहरी-शात झील मे वदल न जाएँ दर्रे
घाटियाँ ये सव तमाम

देवी पर्वतवासिन हो अव भी अगर यहाँ
दाँतो तले उँगली दवा लेगी वह, अद्‌भुत वदलाव देख,

(१९५६)

*इस कविता की दूसरी पक्ति मे मई १९५६ मे ६२ वरस की वय मे माओ द्वारा यागत्सी नदी की प्रसिद्ध तैराकी का उल्लेख है। 'विद्वत्‌जन' जिनका स्मरण एक पक्ति मे है—कन्फ्यूसियस (५५१ ४७९ ई० पू०) हैं। पर्वतवासिन देवी 'वू' है जो उक्त पर्वतो पर शाम को बादल और सुबह वर्षा के लिए उत्तरदायी हैं। दरअसल वू शान क्षेत्र अच्छी वर्षा वाला उपजाऊ प्रदश है।

महामारी के दानव की विदाई

1

कितनी सारी हरियल धाराएँ और नीलाभ शिखर, लेकिन
किस काम के ?
'हुआ' तक को तो पछाड दिया इस नन्हे कीट ने,
पट गए सैकडो गाँव झाड-चखाडो से, चाम हड्डी रह गए लोग,
उजडे हजारो घर, प्रेत तक गाते हैं शोकाकुल धुनो मे
पार करता हूँ पृथ्वी के साथ अस्सी हजार 'ली' की दूरी
प्रतिदिन, निष्पद मैं,
दिखती है, असख्य आकाश गगाएँ दूर आकाश देखूँ तो
पूछें अगर गोपशु यूथ खबर दबर महामारी के दानव की,
कहना यही दुख तैर रहे है समय की धारा पर शुरू से अत तक

विलो वृक्ष की घनी टहनियो मे बहती है वासती हवा
साठ करोड जन हमारी धरती के, सभी बराबर हैं, 'या[illegible]'
चाहे 'शुन ,
वर्षा को किरमिजी बूदें तक नाचती है हमारे इशारे पर,

हरे-भरे पर्वत बदल जाते हैं फूलों में हमारे मन-मन
गिरते हैं चमचम मोतियाँ स्वर्ग को छूती पाँखों
तीनों नदियों के कछारों को तहस-नहस करने

मुरझाए हैं,
कहाँ जा रहा है तू ? पूछते हैं हम महानगरी के दानव से
मोमबत्तियों की लौ से प्रकाशित हो उठता है आकाश
धमक उठते हैं बजते नगाड़ों के।

मिलीशिया महिलाएँ
एक फोटो के नीचे लिखी पंक्तियाँ

कंधे पर रक्खे पाँच फुट की राइफलें, दिखती है कैसी
दीप्तिवान औ बहादुर वे,
भोर की पहली किरणों से उजागर मैदान पर परेड के,
ऊँची आकाक्षाओं वाली बेटियाँ हैं चीन की
सिल्क और साटन नहीं, प्यारी है जुझारु पोशाकें उन्हें

(१६६१

उत्तर एक मित्र को

ऊँचे वादल तैर रहे हैं चियुई पर्वत के ऊपर
हवाओ के हिचकोरो पर सवार
हरे भरे पर्वत शिखरो मे उतर रही हैं राजकुमारियाँ
दिन थे कभी ऐसे कि पोर पोर बांसो के सरावोर रहते थे
उनके, विपुल आंसुओं से ही,
सजी हैं आज गुलावी लाल वादल के वस्त्रो मे
तुर्गतिग ताल की लहरें वर्फ जमी ये, उमड रही हैं जैसे छूने
आसमान को।
सजी आज, गुलावी लाल वादल के वस्त्रो मे
उमड रही हैं जैसे छूने आकाश को, तुर्गतिग ताल की वर्फ पटी
लहरें ये
ओर-छोर थरथरा रहा है द्वीप, धरती थर्राने वाले गानो से,
मैं खोया हूँ यहाँ
भिनसारे के सूरज आलोकित स्वप्नो मे

जून (१९६१)

चिगकागशान पर फिर चढते हुए

कब से ललक थी मन मे कि पहुँचू बादलो तक मैं
और लो चढ रहा हूँ फिर चिगकागशान पर,
आया कितनी दूरी से अपने पुराने, अड्डे को फिर से देखने,
देख रहा हूँ पुरानो की जगह उभरते नए दृश्यो को,
गा रही हैं जगह-जगह ओरियोल अबाबीलें फुदक रही हैं
कलकल करती जलधाराएँ
अतरिक्ष की ओर बढती सडकें,
पार हो जाए हुआग याग-शिह भर, फिर
दूसरी खतरनाक जगहो की कोई बिसात नही,

कसमसा रही है हवाएं तूफानी
लहरा रहे हैं बैनर और पताकाएँ वहाँ
जहाँ-जहाँ लोग बसे है,
हो गए हवा अडतीस बरस
चद चुटकियो मे,

भर सकते हैं हथेली मे चन्दा हम नौवें आकाश का
पकड सकते है कछुए पाँच-पाँच सागरो के नीचे बसे हुए :
लौटेंगे फिर भी हम विजयगानो और ठहाको के बीच,
कठिन नही है इस दुनिया मे कुछ भी
यदि हिम्मत करलें ऊँचाइयाँ सर करने की।

(१६६५)

दो चिड़ियां   एक बात चीत

उठाता भीषण-चक्रवात
फैला है एक पखे की शक्ल मे
नव्बे हजार ली की ऊँचाई लांघता हुआ,
पीठ पर थामे नीला आसमान, झाक रहा है नीचे
जायजा लेते हुए कस्बो, नगरा भरे मानव ससार का,
पहुँचती हैं स्वर्ग तक लपटे बन्दूको की,
गोलियां छेद रही हैं धरती,
कांप रहा है थरथर भयभीत नर गौरैया अपनी झाडी मे
'कैसी बुरी हालत है,
ओह ! उड जाना चाहता हूँ किस कदर फुर्र से बहुत दूर'

'कहां, जान सकती हूँ क्या मैं,
पूछती है गौरैया,
'एल्फदेश के परवत पर बने रतन जडे महल को

जानती नहीं क्या, उस तिहरी सन्धि के बारे में, हस्ताक्षरित
हुई थी
शरद की चाँदनी मे दो वरस पहले जो,
खाने के लिए होगे इफरात वहाँ
गर्मागर्म आलू
कोफ्ते गोश्त के,'
'वन्द करो अपनी उडनछू वकवासें ये
देखो कैसी आमूलचूल वदल रही है दुनिया।'

(१९६५)

हो चो मिन्ह

हजार कवियो का कविता सग्रह
पढने पर

पुरखे चाव से गाते थे गीत नैसर्गिक सौदर्य के
वर्फ के, फूलो के, चांद के, पवन के, नदियो और कुहरो के
पर्वत मालाओ के,
रचने चाहिए गीत हमें आज फौलाद ढले,
और जानने चाहिए कवियो को हमला करने के पैंतरे।

खुद को सलाह

शीतकाल की ठण्डक और बरबादी के बगैर
असम्भव है वैभव और गरमाहट वसत की
बनाया दुघटनाओ ने कडियल और सहनशील मुझे
फौलादी बना दिया है मेरे चित्त को ।

हवाई हमला

आते है गरजते हुए आकाश पर दुश्मन के वायुयान
निर्जन हुआ सारा क्षेत्र
भागे लोग अपने अपने सिर छुपाने को,
जारी थे लगातार हमले पर हमले सो
बाहर किया गया कारागार से हमको भी

जारी हैं गो हमले अब भी बमबारी के
खुश है हम अनायास मिली कैद-मुक्ति से ।

सांझ

खिलता है गुलाब
मुरझाता है
खिलता है गुलाब सूख जाता है
–निष्प्राण
लेकिन खुशबू उसकी भर जाती है
कारागार मे
और गुस्सा जगाती है कैदियो का

प्रतिबन्ध

सचमुच तुच्छ है जीवन स्वतन्त्रता हीन
लघु और दीर्घ शंकाओं पर तक होती है पाबन्दी।
हल्का होने से इन्कार कर देता पेट, खुलते है जब फाटक।
महसूस होती है हाजत तब फाटक बन्द रहे आते है।

बेडियाँ

एक

क्रूर दानवी के समान भूखा मुँह खोलकर,
रोज रात बेडियाँ फँसा लेती पाँव लोगो के,
जकड लेते जबडे पाव दाया हर कैदी का
रहता मुक्त बस बायाँ फैलने और मुडने को।

दो

फिर भी एक अजीब बात है इस दुनिया मे
लोग झपटते पाव बेडियो मे देने को।
जकडे गये कि नींद चैन की गहरी लेंगे।
वरना जगह न पाएगे वे सिर रखने को।

एक सुअर को ढोते हुए
पहरेदार

एक

चलते हमारे साथ, टांगे है पहरेदार सुअर एक
कंधो पर, और मैं घसीटा जा रहा हूँ बेरहमी से।
सुअर से भी बद्तर बर्ताव किया जाता है आदमी से
स्वाधीनता खोते ही।

दो

कड़वाहट और शोक के हजारों कारणों मे
बद्तर नहीं कोई स्वाधीनता गंवाने से,
मुक्त नहीं होते आप, एक बोल, एक इशारे के लिए।
हांकते हैं लोग-बाग घोड़ो, भैंसो जैसे।

आधी रात

सोते हुए सभी चेहरे लगते हैं निश्छल,
गुण-दुर्गुण लोगो के जगने पर खुलते हैं ।
होते नहीं किसी मे जन्मजात गुण अवगुण,
शिक्षा से ही अक्सर वे तमाम मिलते हैं, ।

मुक्त आत्मा

तन है कारागार मे।
किन्तु आत्मा तुम्हारी, कदापि नही।
प्राप्त करने को महान लक्ष्य,
उठने दो ऊँचा अपनी अन्तरात्मा को, ऊँचे से ऊँचा।

लाठी के लिए कविता
जो किसी पहरेदार द्वारा चुरा ली गई

रही तनी और अनन्य जब तक रही मेरे साथ।
हाथो मे हाथ लिए हमने बिताए कितने
मौसम, कुहरे भरे, बर्फानी
भुगतेगा उचक्का वह जिसने किया हमे अलग!
सालेगी बरसो बरस टीस यह लासानी।

निद्राहीन रात्रि

पहला पहर दूसरा तीसरा भी ढल चुका ।
करवटें बदलता मैं, बेकल लगता है, नीद नही आने को
चौथा पहर पाँचवाँ पलकें मूँदते ही
पँचकोना* तारा दिखता है सपने मे ।

*वियतनाम के राष्ट्रीय ध्वज का पँचकोना तारा

कांडी मे चावल कुटने की आवाज सुनते हुए

मूसल के नीचे चावल सहता है
कसी यातनाएँ !
कुटाई हो जाने पर दिखता है कैसा झक्क
कपास के समान वह,
घटती हैं आदमी के साथ भी
ठीक ऐसी घटनाएँ
कडी परीक्षाएँ, देती हैं बदल उसे
परिष्कृत हीरे मे ।

चार माह बीत गए

'कारागार का एक दिन लगता है हज्जारो वरसो जैसा लम्बा'
बेशक ! कितने सही थे पुरखे
चार माह के ही अवमानवीय जीवन ने, जैसे
बुढा दिया दस वरस वेसी मुझको उमर मे ।

वेशक !

पिछले चार माह गुजारे मैंने नाम मात्र के खाने पर,
पिछले चार माह मैं सो न सका गहरी नीद एक रोज,
पिछले चार माह बदले नही कपडे मैंने,
पिछले चार माह मे डुबकी न लगा पाया एक ।

इसीलिए

गिर गया है एक दाँत,
पक गए अधिपतर बाल

खुजाता है रोम-रोम,
करिया सुकटा हुआ मैं भूखे प्रेत सा।

सौभाग्यवश

जिद्दी और सहेजू मैं,
डिगा न एक इंच भी,
भुगत रहा हूँ तन से,
कसमसाएगी नहीं किन्तु कभी आत्मा मेरी।

चे ग्वेवेरा

केस्ट्रो के लिए

तुमने कहा सूरज उगेगा
चलें अपन
अनचली राहों से
मुक्त करने के लिए उन हरे घड़ियालो को,
जो तुम्हें प्यारे हैं।

चलें अपन चीरते
अपमानो को
बाहो पर दिपते काले बागी तारो से
हासिल होगी जीत या गुजरेंगे मौत के बाजू से।

पहली गोली दगते ही पूरा वन
जागेगा विस्मय से और
वहाँ उसी क्षण, एक शात टुकड़ी
हाजिर होगी तुम्हारे बाजू से।

त जब चारो दिशाओ मे—
गुँजाएगी तुम्हारी आवास्वतन्ता
भू-सुधार, न्याय, रोटी, होंगे हम
ठीक उन गूजो के साथ ह
तुम्हारे बाजू से ।

रहा होगा, अपनी घायल भुजा वह
और, जब बर्बर पशु चाटवाई बरछे ने
चोट की है जिस पर क्यू
होगे हम तुम्हारे बाजू से ।
गर्वोन्नत, सीना ताने हुए

के डिगाई जा सकती है
मन मे कभी लाना मत ।
निष्ठा हम लोगो की, स्सुओ द्वारा
उपहारो सजे फुदकते पिलो बन्दूकें, उनकी गोलियाँ और चट्टान एक
हमे तो चाहिए बस उनव
बस कुछ और नही ।

आ जाय अगर
फिर तो फौलाद भी आइास की
मुहिम मे अमरीको इतिह एक क्यूबाई आँसुओ की
लगेगी हमको सिर्फ चादरलला हड्डिया
ढाँकने के लिए अपनी गुर्ा
इससे कुछ अधिक नही ।

आगस्टिनो नेटो

काला बूढा

विका हुआ
और घसीटा गया वेडियो से
कोडो से मारा गया
नोचा गया महानगरो मे
ठगा गया आखिरी छदाम तक
वेइज्जत किया गया धूल मे मिलने तक
हमेशा हमेशा पराजित

और मजबूर किया गया जी हुजूरी करने को
ईश्वर की, लोगो की
कोई वजूद नही है उसका

उसने खो दिया है अपना मुल्क
और अहसास अस्तित्व का

विदाई का गीत

माँ
(सभी काली माताएँ
जिनके बेटे दूर चले गए है)
तूने सिखाया मुझे रखना धीरज
जैस तूने रखा धीरज बुरे दिनो मे

लेकिन जिन्दगी ने
गला घोट दिया मेरी उस रहस्यमयी आशा का

अब मुझमे धीरज नही है
अब मैं वा हूँ जिसके लिये है आकाक्षा

ये मैं हूँ मेरी माँ
हम ह उम्मीदें

तेरे वेटे
जो घर छोड गए उस आस्था के लिए जिसने-सहारा दिया है
जीवन को

आज हम नगे वच्चे है झाडियो मे वसे गावो के
चिथडो की गेंद खेलते स्कूल होन आवारे
दोपहर को धूल मे
हम है विल्कुल
बँधुआ मजदूरा से फूकते अपनी सासे काफो के
खेतो मे
भोदू काले लोग
जिन्हे आदर देना चाहिए गोरो को
और डरना चाहिए रईसो से
हम ह तेरे वटे
काली वस्तियो के वाशिन्दे
विजली की रोशनो की पहुँच से दूर
धुत्त होकर गिरते लोग
डूबे मौत के मादर की लहरो मे
तेरे वेटे
अफरे भूख से
डूबे प्यास से
तुझे माँ कहते शर्माते हुए
डरते गलियाँ पार करने से
डरते लोगो से

ये हमी है
कल
हम गाएँगे गीत स्वतन्त्रता के
तब जब हम मनाएँगे उत्सव
इस गुलामी के अंत का

हम जा रहे हैं खोज मे रोशनी की
तेरे बेटे माँ
(सभी काली माताओं के
जिनके बेटे दूर चले गए हैं)
जाते हैं खोज मे जीवन को

जन्म दिन

कहा खतो और तारो ने
भाई बन्दो के
—वार वार आए दिन, वधाइयाँ वधाइयाँ

एक भाई बीमार
माँ सरावोर उदासी मे
और गरीवी
अगीकार की गई धरम-करम भरी जिन्दगी मे।

उस पर मान एक वेटे के डाक्टर होने का!

घर के बाहर
एक भूतपूर्व सदाचारी दोस्त जा

सोखता है सा-आ-ज़ोम को निर्यात किये गए हमारे अपनों को
वेश्यावृत्ति
व्यापक यन्त्रणा
शर्म
उस पर उम्मीद हममे से एक के वैद होने की !

दुनिया मे
आदमियो के हाथो खूनाखून हुआ कोरिया
गोली मार दस्ते यूनान मे और हडतालें इटली मे
रगभेद अफ्रीका मे,
हडबडी परमाणु-यन्त्रो से सामूहिक वध की—
खत्म करने की ज्यादा से ज्यादा लोग

उनका पीटना हमे
और उपदेश देना आतक के।
लेकिन दुनिया मे होता है निर्माण
होता है दुनिया मे निर्माण

और हमारा वैद्यक पढा बेटा
भी उसमे हिस्सा लेगा !
निश्चित और अनिश्चितता लिए क्षणो की
पेचीदा गलियो मे भी सीधी सच्ची राह लेने वाले हम
कमजोर हिरणो की तरह भागने वाले हम शेर

फिर भी इस दुनिया मे निर्माण है
निर्माण है इस दुनिया मे

यह दिन मेरा जन्म दिन है
हमारे
इमली चखते दिनो मे से एक
जब हम कुछ नही करते, करते कुछ नही यातना नही सहते कोई,
बधुएपन की श्रद्धाजलि मे ।

उस रोज तक पहुँचते कई और वृथा दिनो की तरह एक और
अकारथ दिन
एक खास अकारथपन से भरा ।

सजाना तुम्हारे केशों का

वे जड़ें
जिनसे लोग
अपने को सहेजे रखते हैं

अगर लम्बी हुई हैं सदियाँ
और थकी हुई हैं आवाजे
तो उसकी वजह है—
कि हमारी राह अनोखी है
—प्रिये
उस रोज
गुलाब और खिलेंग
मैं जाऊँगा और उन्हे चुनूगा
दूर से दूर घास के मदानो मे
कठिन से कठिन पहुच वाले पहाडो मे
मरीचिकाआ म
दोस्तियो मे
और दूरियो मे जो हमे जोडती ह ।
उस राज वढगे पनपेगे गुलाव
सदावहार गुलाव गुलाव
कई-कई गुलाव अपने प्यार प
सजाने के लिये तेरे केश

लौटना ही चाहिए हमें

अपने घरों को, अपनी मेहनतों को
अपने समुद्र तटों, अपने खेतों को
लौटना ही चाहिए हमें

अपनी
काफी से लाल
रुई से सफेद
मकई से हरी हुई माटियों को
लौटना ही चाहिए हमें

अपने हीरों
सोने, तांबे और पेट्रोलियम की खुदाई को
लौटना ही चाहिए हमें

अपनी नदियों और अपनी झीलों

पहाड़ों और जगलों की ओर
लौटना ही चाहिए हमें

अजीरों के दरख्तों की ताजगी
अपनी किंवदन्तियों
अपनी धुनों और अग्नियों की ओर
लौटना ही चाहिए हमें

खूबसूरत अगोला के देश गाँव की ओर
और अपनी धरती की, अपनी मा की ओर
लौटना ही चाहिए, हमें
लौटना ही चाहिए हमें
मुक्त किए गए अगोला—
स्वतत्र अगोला की ओर।

फ्रेडरिक एगल्स

२८ नवम्बर १८२० को जर्मनी के वार्मेन नगर म एक उद्योगपति परिवार मे जन्मे। हाईस्कूल परीक्षा पास करन स पहले ही पैतृक व्यवसाय म लग गए। इसी बीच हीगल के विचारो से प्रभावित हुए। साहित्य, दशन, अथशास्त्र, इतिहास तथा विभिन्न भाषाओ का गहरा अध्ययन किया। ७० वप की आयु मे इब्सन को मूल म पढने के लिए नार्वे की भाषा सीखी। १८४१ ४२ मे जमन तोपखाने म काम करत हुए युद्ध विद्या का अध्ययन किया। कविताएँ तथा व्यग्यात्मक गद्य लिखा। १८४२ म मैंचेस्टर की यात्रा की। श्रमिक आन्दोलनो म हिस्सा लिया। १८४४ मे मार्क्स से मुलाकात क बाद दोनो ने मिलकर 'पवित्र परिवार' पुस्तक लिखी। इसी वप वे ब्रुसेल्स पहुँचे और वहाँ लेबर यूनियन स्थापित की फिर कम्युनिस्ट लीग। १८४७ म मार्क्स क साथ कम्युनिस्ट घोषणा पत्र तैयार किया। 'व्यक्तिगत सम्पत्ति, ड्यूहरिंग मतखडन, समाजवाद वैज्ञानिक और काल्पनिक, प्रकृति का द्वद्ववाद आदि उनकी अन्य महत्वपूण पुस्तकें है। ६ अगस्त १८९५ को कैसर से उनका निधन हुआ।

लेनिन

व्लादीमीर इलियच उल्यानोफ लेनिन का जन्म १० अप्रैल १८७० को रूस के सिम्बीरस्क (अब उल्यानोव्स्क) नगर म हुआ। पिता शिक्षक थे बाद म शिक्षाधिकारी हुए। माँ कई भाषाओ, सगीत तथा साहित्य की जानकार थीं। बचपन से ही सवेदनशील, परिश्रमी और मेधावी। पुश्किन, लर्मेन्तोव, गोगोल, तुर्गनेव, तालसताय बेलिन्स्की आदि के प्रेमी। रूसी जारशाही के विरुद्ध विद्रोह करन के आरोप मे १८८७ मे फाँसी की सजा पाने वाले अपन भाई स प्रभावित। १८८७ मे विद्यार्थियो की सभा मे भाग लेन के कारण गिरफ्तार हुए और उनका नाम राजनैतिक दृष्टि से खतरनाक लोगो की सूची म आ गया। १८८९ मे मार्क्स और एगल्स का गहरा अध्ययन किया और जमन सीखकर 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र' का रूसी भाषा म अनुवाद किया। १८९२ म पहला मार्क्सवादी मडल गठित किया। १८९३ म पीटसबर्ग पहुँचकर मजदूरो के बीच काम

करना शुरू किया और 'जनता के मित्र' नामक पुस्तक लिखी। १८६५ मे संघर्ष लीग बनी और १८६६ में पीटसबर्ग की मशहूर कपड़ा मिल हड़ताल हुई जिसमें ३०,००० से ज्यादा कामगारो ने हिस्सा लिया। गिरफ्तार हुए। जेल में ही 'पूंजीवाद का विकास' नामक पुस्तक लिखी। १८६७ में साइबेरिया मे निष्कासन का दंड मिला। इसी अवधि मे क्रान्तिकारी मार्क्सवादी पार्टी स्थापित की। १६०० में लेनिन जर्मनी चले गए और वहाँ से 'चिंगारी' नामक क्रांतिकारी पत्र छापकर गुप्त रूप से रूस पहुँचाया। १६०१ मे पहली बार 'लेनिन' उपनाम का प्रयोग किया। १६०५ में 'क्या करें' पुस्तक आई। वे लन्दन गए। १६०३ में जेनेवा। १६०५ मे मजदूर पार्टी की तीसरी बैठक मे अध्यक्ष चुने गए। पीटसबर्ग लौटे। 'पार्टीगत संगठन और पार्टीगत साहित्य' लेख छपा। १६१२ मे यहीं से 'प्राव्दा' निकाला। ऐतिहासिक अक्टूबर क्रांति का नेतृत्व किया और समाजवादी सोवियत गणराज्य के जनक बने। २१ जनवरी १६२४ को मस्तिष्क के रक्तस्राव से उनका देहान्त हुआ। यह लेनिन की एक मात्र कविता मानी जाती है।

माओत्से तुंग (माओ जे दांग)

२६ १२-१८६३ को चीन के शाओशान नगर में जन्म। १६११ में मांचुई राजवंश के विरुद्ध सन यात सेन के प्रेरणा से गठित क्रांतिकारी दल के सदस्य हुए। १६१६ में पेकिंग विश्वविद्यालय में विद्यार्थियो के चौथी मई आन्दोलन मे भाग लिया। इसी बीच मार्क्सवाद लेनिनवाद से प्रभावित हुए। १६२४-२५ में कम्युनिस्ट गुरिल्ला इकाई स्थापित की। १६३४ ३५ में च्यांग काई शेक से मतभेद होने पर अपनी २०,००० की टुकड़ी सहित दक्षिण पूर्व चीन (क्यांग्सी) से उत्तर पूर्व के पहाड़ो की ओर कूच किया। यह लम्बी कूच विश्व भर मे प्रसिद्ध हुई। निरंतर संघर्ष और विजयो के बाद १६४६ में जनवादी चीन गणराज्य की स्थापना की घोषणा की। १६५७ मे लम्बी कूद आन्दोलन से अर्थव्यवस्था के विकेन्द्रीकरण का प्रयत्न शुरू किया। १६५६ में देश के राष्ट्रपति पद से अलग हुए किन्तु पार्टी के चेयरमैन बने रहे। इसी पद मे १६६६-६६ की अवधि में सांस्कृतिक क्रांति चलाई। ८ ६ १६७६ को देहावसान हुआ। जीवन भर लिखी गई कविताओं का बहुत बड़ा संग्रह।

हो ची मिन्ह

वास्तविक नाम गुएन थाट था ह १८ मई १८८० को उत्तर वियत नाम क हो आग वू नामक स्थान म जन्म। गरीबी म पले वढे। कइ वप शिक्षक और नौसनिक रहे। १८१६ म वर्सेलीस कान्फ्रेंस म हिन्द चीन की जनता को समानता के अधिकार दिलाए जान क लिए पिटीशन की। १८२० म फ्रासीसी कम्युनिस्ट पार्टी क सदस्य वन। केन्टन (चीन) म वियतनामी राष्ट्रवादी आन्दोलन सगठित किया। १८३० मे हिन्दचीन कम्युनिस्ट पार्टी के सस्थापक अध्यक्ष हुए। फ्रासीसिया द्वारा क्रातिकारी अपराधी घोषित किए जाने पर मास्को चले गए। वहा स १६३८ मे चीन पहुंचे जहा १८ माह का कारावास हुआ और कविताओ की प्रसिद्ध पुस्तक प्रिजन डायरी (चीनी भाषा मे) तैयार हुई। १८४१ मे गुप्त रूप से वियतनाम लौटे। गुरिल्ला सेना गठित की जिसने वियतनाम और चीन म जापानियो से टक्कर ली। १८४५ म वियतनाम की स्वतत्रता की घोषणा की। १६४६ ५४ तक पहले हिन्द चीन युद्ध का नतृत्व किया। जेनेवा समझौता हुआ। १८५८ म अमरीकिया के साथ दूसरा हिन्द-चीन युद्ध हुआ जो ससार की सर्वाधिक शक्तिशाली कही जान वाली सेना के पराजय और वियतनाम के एकीकरण स समाप्त हुआ। ३ सितम्बर १८६८ को हनोई म उनका देहान्त हुआ।

चे ग्वेवेरा

जीते जी किंवदती बन जाने वाले अर्नेस्टो ग्वेवेरा दे ल सेरना का जन्म १४ जून १६२८ को अर्जेन्टिना के रोजेरियो नगर म हुआ। परिवार मध्यवर्गीय था। किशोरावस्था मे ही अच्छे खिलाडी, प्रतिभाशाली विद्यार्थी और तेजस्वी नेता के रूप म जाने गए। १६५३ मे मेडिकल शिक्षा पूरी की। छुट्टियो मे दक्षिण अमेरिकी देशो की लम्बी यात्राएँ की जो बाद म काम आई। १६५८ मे ग्वाटेमाला पहुचे जहाँ उन्हे प्रसिद्ध उपनाम चे' मिला। यहाँ की प्रगतिशील सरकार का तख्ता पलटा दिए जाने पर मेक्सिको पहुँचे जहा केस्ट्रा वधुआ-फिडेल और राउल से उनकी मुलाकात हुई जो वहाँ बातिस्ता सरकार के निष्कासितों के रूप मे रह रहे थे। २५ नवम्बर १६५६

को अपने ८२ गुरिल्ला साथियों सहित 'चे' नाव से बयूबा पहुँचे—मुठभेड़ हुई और घायल चे 'सियरा मेस्त्रा' पर्वत में जा छुपे। वहाँ क्यूबाई क्रांति के सहभागी रहे। निरन्तर छापामार संघर्ष के बाद जब २ जनवरी १९५९ को विजेता गुरिल्ला हवाना पहुँची तो 'चे' क्यूबाई नागरिक हो गए। शासन में रहे। १९ अप्रैल १९६५ को क्यूबाई सत्ता से अलग हुए। इसी बीच उन्होंने किसी स्थान से फ़िदेल को एक पत्र में लिखा कि अब वे दूसरे देशों के मुक्ति-युद्ध में भाग लेना चाहते हैं। १९६६ की शरद ऋतु में गुप्त रूप से बोलिविया पहुँचे और गुरिल्ला युद्ध का नेतृत्व किया। ८ अक्टूबर १९६७ को घायल अवस्था में पकड़े जाने के बाद गोली से उड़ा दिए गए। ज्याँ पाल सार्त्र ने कहा है कि चे हमारे समय के सर्वाधिक पूर्ण मानव थे। उनकी एक ही कविता मिलती है।

आगस्टिनो नेटो

एन्टोनियो आगस्टिनो नेटो का जन्म १७ सितम्बर १९२२ को अंगोला में लुआंडा से ६० किलोमीटर दूर कासिकाने नामक एक कस्बे में हुआ। हाइस्कूल पास करने के बाद कुछ दिन स्वास्थ्य विभाग में नौकरी की फिर पुर्तगाल चले गए जहाँ १९४७ में चिकित्सा शिक्षा में दाखिला लिया। राजनैतिक गतिविधियों के कारण १९५१ में गिरफ्तार हुए। ३ माह बाद छूटे। १९५५ में फिर गिरफ्तार हुए और दुनिया भर में विरोध के कारण १९५७ में छूटे। १९५९ में डाक्टर होकर अंगोला लौटे। अंगोला में पुर्तगाली अत्याचार का विरोध करने पर १९६० में फिर गिरफ्तार कर लिए गए। विश्वव्यापी प्रतिरोध के कारण १९६२ में मुक्त किये गए और पुर्तगाल में रखे गए। अपनी मुक्ति सेना की मदद से उन्होंने गुप्त रूप से अपनी पत्नी और बच्चों के साथ लियोपोल्डविले कांगो में शरण ली। १९७५ में अंगोला के स्वतंत्र होने के बाद उसके राष्ट्रपति चुने गए।